बीकानेर संस्करण
www.dainiknavajyoti.com
नवज्योति
जयपुर, मंगलवार, 24 मार्च 2015 | जयपुर | 9

अब बीकानेर में भी भेड़ों का कृत्रिम गर्भाधान

न्यूज सर्विस/नवज्योति, बीकानेर

एशिया की बीकानेर स्थित सबसे बड़ी ऊन मंडी का वैभव पुनः लौटाने के प्रयासों के तहत केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान मरु क्षेत्रीय परिसर बीकानेर में नए वित्त वर्ष से भेड़ों का कृत्रिम गर्भाधान का कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। केन्द्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. ए. के. पटेल ने सोमवार को दैनिक नवज्योति से बातचीत में बताया कि मगरा नेटवर्क परियोजना के तहत कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम की शुरूआत के लिये केन्द्र में लेब तैयार की जा चुकी है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत एक अच्छी नस्ल की मेल भेड़ के सीमन से एक साथ 30 फीमेल भेड़ों को गाभिन किया जा सकेगा। डॉ. पटेल ने बताया कि प्राकृतिक तरीकों से एक मेल एनिमल के सीमन से एक बार में एक भेड़ ही गर्भ धारण करती है लेकिन कृत्रिम गर्भाधान में एक मेल एनिमल के एक बार लिए गए सीमन से 30 भेड़ें पैदा की जा सकेगी। इस प्रकार लगातार किए जाने से एक अच्छी नस्ल की मेल भेड़ से हजारों अच्छी नस्ल की भेड़े पैदा की जा सकेंगी। उन्होंने बताया कि कृत्रिम गर्भाधान का कार्यक्रम केन्द्र के टोंक में मालपुरा स्थित मुख्यालय में शुरू करने के बाद अब बीकानेर में भी शुरू किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को शुरू करने के बाद यदि किसान चाहेंगे कि उनको अच्छे मेल भेड़ का बीज मिले तो केन्द्र किसानों को बीज उपलब्ध करायेगा। इसके लिये केन्द्र के वैज्ञानिक खुद सीमन लेकर किसानों के गांव भी जाएंगे क्योंकि एक बार मेल भेड़ से लिए सीमन 24 घंटे के अंदर तक उपयोग हो सकता है। डॉ. पटेल ने बताया कि शुरूआत में इस कार्यक्रम के तहत केन्द्र बीकानेर में अपने गोद लिए गांवों जालवाली, कोटड़ा, कानासर के आसपास के 11 गांवों में सुविधा देगा बाद में सभी गावों तक पहुंचने का प्रयास किया जाएगा। डॉ. पटेल ने बताया कि कृत्रिम गर्भाधान के साथ साथ नेचुरल मेटिंग का कार्य भी जारी रहेगा। आज केन्द्र का प्राथमिक काम है भेड़ की ऊन की उत्पादकता कैसे बढ़े, गुणवत्ता कैसे बढ़े और बरकरार रहे।

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान बीकानेर उप केन्द्र के हैड डॉ. ए. के. पटेल।

अधिक ऊन के लिए जरूरी है सही नस्ल

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान बीकानेर उप केन्द्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. पटेल ने बताया कि अधिक ऊन उत्पादन के लिए अच्छी नस्ल की भेड़ें होना जरूरी है। उन्होंने बताया कि राजस्थान में भेड़ की आठ अच्छी नस्ले हैं। इनमें चार-पांच नस्लें बीकानेर क्षेत्र की हैं। उन्होंने बताया कि बीकानेर के उप केन्द्र पर मगरा चौकला व मारवाड़ी तीन नस्लों को मेन्टेन कर रखा है। गत पांच वर्षों में मगरा व मारवाड़ी नस्ल के 1200 मेल एनिमल गांवों में नस्ल सुधार के लिये उपलब्ध कराये गए हैं। बीकोनर की चोकला भेड़ से एक बार में लगभग सवा दो किलो ऊन ली जा सकती है। इसी कारण 1974 में बीकानेर में केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान का उप केन्द्र बीकानेर में स्थापित किया गया। शुरूआत में संस्था काजरी के पास थी। बाद में काजरी से 636 हैक्टेयर भूमि लेकर उस पर केन्द्र की भेड़ों के लिये चारागाह विकसित किया।

आज भी है दो गुना ऊन की आवश्यकता

डॉ. पटेल ने बताया कि आज भी देश में 150 मीलियन ऊन उत्पादन की आवश्यकता है जबकि देश में मात्र 44 मीलियन केजी ऊन का ही उत्पादन हो रहा है। ऐसे में देश को विदेशों से ऊन मंगानी पड़ रही है। ऐसे में देश में ऊन उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता तो है। उन्होंने बताया कि पहले देश में भेड़ पालन ऊन के लिये होता था बाद में विदेशी और सिन्थेटिक ऊन बाजार में आने से प्राकृतिक ऊन का दाम घट गया था और किसान मांस के लिये भेड़ों का पालन करने लगे।

घटते चारागाह बने समस्या

डॉ. पटेल ने कहा कि देश में घटते चारागहों के चलते भेड़ पालन कठिन हो गया है। आधुनिकीकरण होने से किसानों के बच्चे भी भेड़ पालन जैसे प्रोफेशन में कम रुचि ले रहे हैं। यही कारण है कि देश में भेड़ पालन, बकरी पालन, ऊंट पालन कम होता जा रहा है। जबकि डेयरी पालन ही बढ़ रहा है। क्योंकि डेयरी के पशु का दूध खाद्यान के लिये उपयोग हो रहा है।

प्योर नस्ल रखना जरूरी

डॉ. पटेल ने भेड़ पालकों से आह्वान किया है कि वे अपनी भेड़ों की नस्ल के सुधार के लिये अच्छी नस्ल के मेंढे पालें। बीकोनर में मगरा नस्ल अच्छी है। इस नस्ल की भेड़ों से दो से सवा दो किलो ऊन ली जा सकती है। मगरा, मारवाड़ी व चौकला नस्ल के मेल एनिमल बीकानेर केन्द्र में मिल सकते हैं। साथ ही पशुओं को संतुलित आहार दिया जाना तथा उसके स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी जरूरी है।